Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



कक्षा – 9

हिन्दी

क्षितिज (गद्य खंड)

अध्याय–5 : प्रेमचंद के फटे जूते (हरिशंकर परसाई)

भाग – 3

अभ्यास प्रश्न

कुशाल सोलंकी

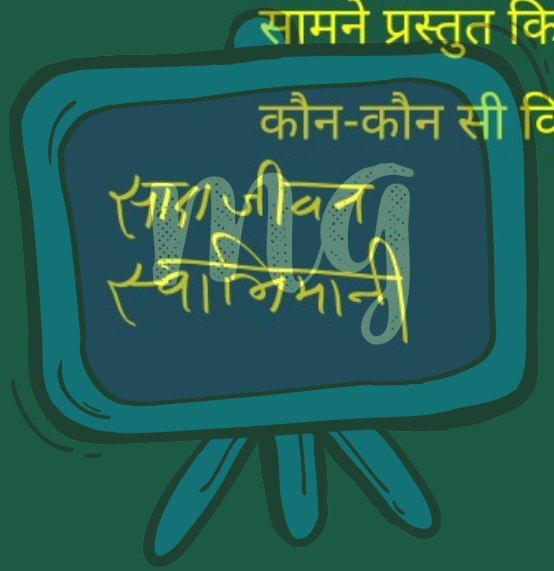
Under CSR Support by
ipca | Foundation

अभ्यास प्रश्न

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



1. हरिशंकर परसाई ने प्रेमचंद का जो शब्दचित्र हमारे सामने प्रस्तुत किया है उससे प्रेमचंद के व्यक्तित्व की कौन-कौन सी विशेषताएँ उभरकर आती हैं?



अभ्यास प्रश्न



1. हरिशंकर परसाई ने प्रेमचंद का जो शब्दचित्र हमारे सामने प्रस्तुत किया है उससे प्रेमचंद के व्यक्तित्व की कौन-कौन सी विशेषताएँ उभरकर आती हैं?

उत्तर : उत्तर-'प्रेमचंद के फटे जूते' नामक व्यंग्य को पढ़कर प्रेमचंद के व्यक्तित्व की निम्नलिखित विशेषताएँ उभरकर सामने आती है–

संघर्षशील लेखक : प्रेमचंद आजीवन संघर्ष करते रहे। उन्होंने मार्ग में आने वाली चट्टानों को ठोकर मारी। अगल-बगल के रास्ते नहीं खोजे। समझौते नहीं किए।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

अभ्यास प्रश्न

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



लेखक के शब्दों में-

"तुम किसी सख्त चीज़ को ठोकर मारते रहे हो। ठोकर मार-मारकर अपना जूता फाड़ लिया।"

अपराजेय व्यक्तित्व : प्रेमचंद का व्यक्तित्व अपराजेय था। उन्होंने कष्ट सहकर भी कभी हार नहीं मानी। यदि वे मनचाहा परिवर्तन नहीं कर पाए, तो कम-से-कम कमजोरियों पर हँसे तो सही। उन्होंने निराश हताश जीने की बजाय मुसकान बनाए रखी। उनकी नजरों में तीखा व्यंग्य और आत्मविश्वास था।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

अभ्यास प्रश्न

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



लेखक के शब्दों में "यह कैसा आदमी है, जो खुद तो फटे जूते पहने फोटो खिंचा रहा है, पर किसी पर हँस भी रहा है।"

कष्टग्रस्त जीवन : प्रेमचंद जीवन-भर आर्थिक संकट झेलते रहे। उन्होंने गरीबी को सहर्ष स्वीकार किया। वे बहुत सीधे-सादे वस्त्र पहनते थे। उनके पास पहनने को ठीक से जूते भी नहीं थे। फिर भी वे हीनता से पीड़ित नहीं थे। उन्होंने फोटो खिंचवाने में भी अपनी सहजता बनाए रखी।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

अभ्यास प्रश्न

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



सहजता : प्रेमचंद अंदर-बाहर से एक थे। लेखक के शब्दों में "इस आदमी को अलग-अलग पोशाक नहीं होगी इसमे पोशाकें बदलने का गुण नहीं है।"

मर्यादित जीवन : प्रेमचंद ने जीवन-भर मानवीय मर्यादाओं को निभाया। उन्होंने अपने नेम-धरम को, अर्थात् लेखकीय गरिमा को बनाए रखा। वे व्यक्ति के रूप में तथा लेखक के रूप में श्रेष्ठ आचरण करते रहे।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

अभ्यास प्रश्न

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



2. नीचे दी गई पंक्तियों में निहित व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए-

(क) जूता हमेशा टोपी से कीमती रहा है। अब तो जूते की कीमत और बढ़ गई है और एक जूते पर पचीसों टोपियाँ न्योछावर होती हैं।

अभ्यास प्रश्न



2. नीचे दी गई पंक्तियों में निहित व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए-

(क) जूता हमेशा टोपी से कीमती रहा है। अब तो जूते की कीमत और बढ़ गई है और एक जूते पर पचीसों टोपियाँ न्योछावर होती हैं।

उत्तर : जीवन में यह विडंबना है कि जिसका स्थान पाँव में है, अर्थात् नीचे है, उसे अधिक महत्त्वपूर्ण माना जाता रहा है। जिसका स्थान ऊँचा है, जो सिर पर बिठाने योग्य है, उसे कम सम्मान मिलता रहा है। आजकल तो जूतों का अर्थात् धनवानों का मान-सम्मान और भी अधिक बढ़ गया है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

अभ्यास प्रश्न

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



एक धनवान पर पच्चीसों गुणी लोग न्योछावर होते हैं। गुणी लोग भी धनवानों की जी-हुजूरी करते नजर आते हैं।

अभ्यास प्रश्न



प्रेमचंद

(ख) तुम परदे का महत्व ही नहीं जानते, हम परदे पर कुर्बान हो रहे हैं।



अभ्यास प्रश्न



(ख) तुम परदे का महत्व ही नहीं जानते, हम परदे पर कुर्बान हो रहे हैं।

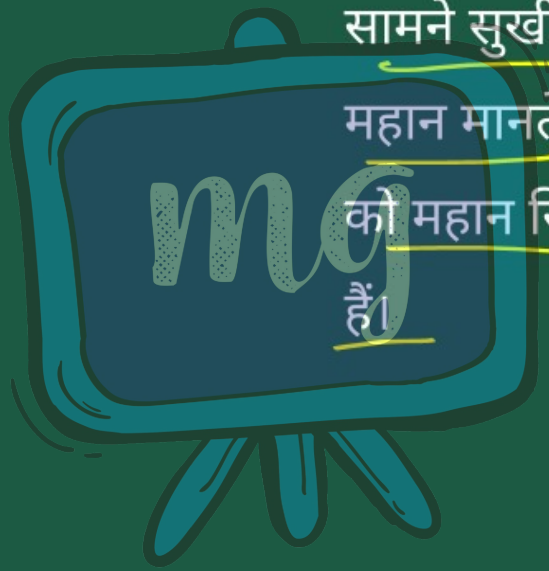
उत्तर : उत्तर-प्रेमचंद ने कभी पर्दे को अर्थात् लुकाव-छिपाव को महत्त्व नहीं दिया। उन्होंने वास्तविकता को कभी ढँकने का प्रयत्न नहीं किया। वे इसी में संतुष्ट थे कि उनके पास छिपाने योग्य कुछ नहीं था। वे अंदर-बाहर से एक थे। यहाँ तक कि उनका पहनावा भी अलग-अलग न था। लेखक अपनी तथा अपने युग की मनोभावना पर व्यंग्य करता है कि हम पर्दा रखने को बड़ा गुण मानते हैं।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

अभ्यास प्रश्न

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER





जो व्यक्ति अपने कष्टों को छिपाकर समाज के सामने सुखी होने का ढोंग करता है, हम उसी को महान मानते हैं। जो अपने दोषों को छिपाकर स्वयं को महान सिद्ध करता है, हम उसी को श्रेष्ठ मानते हैं।

अभ्यास प्रश्न

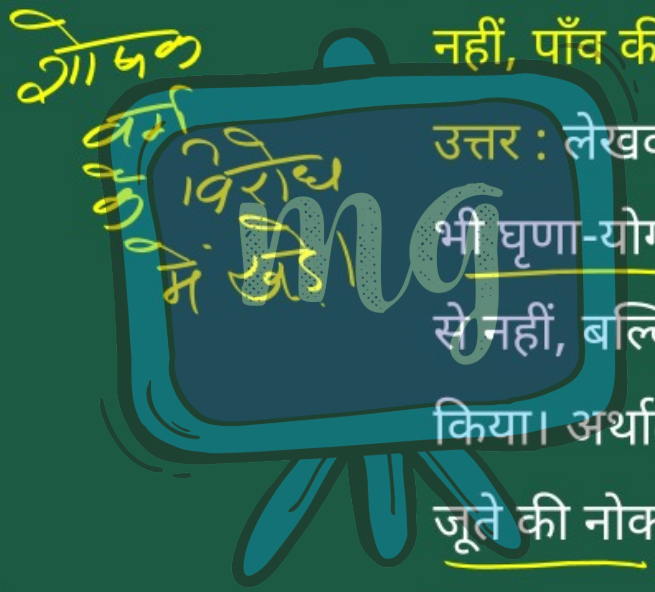


(ग) जिसे तुम घृणित समझते हो, उसकी तरफ़ हाथ की नहीं, पाँव की अँगुली से इशारा करते हो?



अभ्यास प्रश्न





(ग) जिसे तुम घृणित समझते हो, उसकी तरफ़ हाथ की नहीं, पाँव की अँगुली से इशारा करते हो?

उत्तर : लेखक कहता है-प्रेमचंद ने समाज में जिसे भी घृणा-योग्य समझा, उसकी ओर हाथ की अँगुली से नहीं, बल्कि अपने पाँव की अँगुली से इशारा किया। अर्थात् उसे अपनी ठोकरों पर रखा, अपने जूते की नोक पर रखा, उसके विरुद्ध संघर्ष किए रखा।

अभ्यास प्रश्न



3. पाठ में एक जगह पर लेखक सोचता है कि 'फोटो खिंचाने की अगर यह पोशाक है तो पहनने की कैसी होगी?' लेकिन अगले ही पल वह विचार बदलता है कि 'नहीं, इस आदमी की अलग-अलग पोशाकें नहीं होंगी।' आपके अनुसार इस संदर्भ में प्रेमचंद के बारे में लेखक के विचार बदलने की क्या वजहें हो सकती हैं?



उत्तर : इसके दो कारण हो सकते हैं-

1. लेखक ने पहली टिप्पणी सामान्य रूप से जगत के व्यवहार को देखकर की थी। प्राय: लोग अपने घर पहनने के और बाहर पहनने के कपड़ों में अंतर करते हैं। परंतु प्रेमचंद इन सबसे अलग हैं-यह उन्होंने बाद में सोचा।
2. लेखक ने देखा कि प्रेमचंद जीवन-भर सरल और सहज बने रहे। उन्होंने कभी दिखावटी जीवन नहीं जिया। इसलिए पोशाकें बदलने की बात उन पर लागू नहीं होती। इसलिए उन्होंने बाद में अपनी टिप्पणी बदल दी।

अभ्यास प्रश्न



4. पाठ पढ़कर आपको लेखक की कौन सी बातें आकर्षित करती हैं?





4. पाठ पढ़कर आपको लेखक की कौन सी बातें आकर्षित करती हैं?

उत्तर : मुझे इस व्यंग्य की सबसे आकर्षक बात लगती है-विस्तारण शैली। लेखक एक संदर्भ से दूसरे संदर्भ की ओर बढ़ता चला जाता है। वह बूँद में समुद्र खोजने का प्रयत्न करता है। जैसे बीज में से क्रमशः अंकुर का, फिर पल्लव का, फिर पौधे और तने का; तथा अंत में फूल-फल का विकास होता चला जाता है, उसी प्रकार इस निबंध में प्रेमचंद के फटे जूते से बात शुरू होती है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

अभ्यास प्रश्न

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



वह बात खुलते-खुलते प्रेमचंद के पूरे व्यक्तित्व को उद्घाटित कर देती है। बात से बात निकालने की यह व्यंग्य शैली बहुत आकर्षक बन पड़ी है।

समाज में हिंदी साहित्यकारों की आर्थिक स्थिति का उल्लेख
समाज की हिंदी के प्रति उदासीनता

अभ्यास प्रश्न



5. पाठ में 'टीले' शब्द का प्रयोग किन संदर्भों को इंगित करने के लिए किया गया होगा?



अभ्यास प्रश्न



5. पाठ में 'टीले' शब्द का प्रयोग किन संदर्भों को इंगित करने के लिए किया गया होगा?

उत्तर : 'टीला' रास्ते की रुकावट का प्रतीक है। जैसे बहती नदी में खड़ा कोई टीला सारे बहाव को रोक देता है, उसी भाँति अनेक बुराइयाँ, कुरीतियाँ और भ्रष्ट आचरण जीवन की सहज गति को बाधित कर देते हैं। इस पाठ में 'टीला' शब्द का प्रयोग शोषण, अन्याय, छुआछूत, जाति-पाँति, महाजनी सभ्यता आदि बुराइयों के लिए हुआ है।

अभ्यास प्रश्न



6. इस पाठ में हिंदी लेखकों की स्थिति पर क्या व्यंग्य किया गया है?



अभ्यास प्रश्न



6. इस पाठ में हिंदी लेखकों की स्थिति पर क्या व्यंग्य किया गया है?

उत्तर : इस पाठ में हिंदी लेखकों की दयनीय दशा पर प्रकाश डाला गया है। लेखक ने सफलतापूर्वक यह दिखलाया है कि जिसे हम हिंदी उपन्यास का सम्राट् कहते हैं, उसकी आर्थिक स्थिति कैसी जर्जर थी। समाज उन्हें सम्मान तो देता है किंतु जीने योग्य धन नहीं प्रदान करता। लेखक ने स्वयं अपने बारे में यही कहा है- 'मेरा जूता भी कोई अच्छा नहीं है। यों ऊपर से अच्छा दिखता है।' स्पष्ट है कि हिंदी लेखकों की आर्थिक दशा बहुत कमज़ोर है।

अभ्यास प्रश्न



7. लेखक ने प्रेमचंद के जूते फटने का क्या कारण सोचा? पाठ के आधार पर लिखिए।



अभ्यास प्रश्न



7. लेखक ने प्रेमचंद के जूते फटने का क्या कारण सोचा? पाठ के आधार पर लिखिए।

उत्तर : लेखक के अनुसार, प्रेमचंद ने समाज की कुरीतियों पर जोर-जोर से ठोकरें मारी। उन्होंने कुरीतियों से बचने की कोशिश नहीं की। इस कारण उनके जूते फट गए। आशय यह है कि समाज की बुराइयों से संघर्ष के कारण उन्हें समाज से धन-वैभव नहीं मिल पाया। श्रीमानों ने उनका समर्थन नहीं किया। यदि वे धनी लोगों को प्रसन्न करने के लिए लिखते तो उन्हें धन-वैभव अवश्य मिलता।